

— अनुप्र *hinfliegen*: प्र वा वयो वपुषे ऽनु पतन् RV. 6, 63, 6. गेहानुप्र-
पातम्, गेहं गेहमनुप्रपातम्, गेहमनुप्रपातमनुप्रपातम् adv. wohl von *Haus*
zu *Haus eilend* (anders u. अनुप्रपात) P. 4, 3, 56, Sch.

— निष्प्र s. दुर्निष्प्रपतन.

— प्रति *entgegenfliegen, entgegeneilen*: तान्यनोकानि निवर्तमानान्या-
लोकाय — हेमो यथा मेघमिवापतन्तं धनंजयः प्रत्यपतत्स्वी MBh. 4, 2110.

— वि 1) *durchschneiden*: व्यङ्गिणा पतथ लेषमर्णवम् RV. 1, 168, 6.

— 2) *abfallen, abfliegen, sich abtrennen*: मूर्धा क्वास्य विपतेत् ÇAT. Br. 3, 6, 1, 23. 11, 4, 1, 9. 14, 6, 7, 4. 9, 28. KHAND. UP. 1, 10, 9. fgg. 11, 4. fgg. 5, 12, 2 (wo व्यपतिष्यत् zu lesen ist). — 1. caus. (पतय्) *sich aufthun, sich öffnen*: वि मे कर्णा पतयतः RV. 6, 9, 6. — 2) caus. (पातय्) *wegfliegen machen, abschiessen*: वि ते मदं मदावति शर्मिव पातयामसि AV. 4, 7, 4. व्यपात-
यच्छरान् MBh. 4, 1862. *abfliegen machen, abtrennen, abhauen*: शिर ए-
षा वि पातय AV. 19, 28, 4. ÇAT. Br. 14, 4, 1, 26. *niedermachen, tödten*:
कुरुप्रवीरानिषुभिव्यपातयत् MBh. 7, 6149. तांस्तु देवकृतान्पूर्वं पञ्चद्वि-
णिव्यपातयत् 10, 392. Es ist wohl an beiden Stellen न्यपा० zu lesen.

— अनुत्रि *davonfliegen nach* (acc.): (वाचाम्) एका वि प्रपातानु घोषम्
AV. 7, 43, 1.

— सम् *zusammenfliegen, — eilen; sich zusammenfinden, — verei-
nigen bei, auf* (acc.), *zusammenkommen mit* (intr.); *hinfliegen, hineilen;*
herbeigeflogen —, herbeigeilt kommen, herankommen, hinzukommen,
hingehen zu, gelangen zu, daherfliegen, daherkommen: यत्र बाणाः सं-
पतन्ति कुमार विशिखा इव RV. 6, 75, 17. समश्रयणाः पतन्तु नो नरः AV.
6, 126, 3. 11, 10, 7. शितिपदी सं पतन्ति त्राणांममूः सिचः 20. (पृथिवी) यां
द्विपादः पतिष्यः संपतन्ति 12, 1, 51. तत्र राजर्षयः — सेपेतुः शतसंघशः INDR.
1, 36 (MBh. 3, 1749). 6, 51. 4326. 7, 9032. R. 2, 91, 48. 6, 9, 24. दोष्यमाना-
श्च संपेतुर्दिवि सप्त मक्षारुहाः MBh. 6, 637. संपतेत्तेन Kām. NITIS. 12, 30.
रभसेन न संपतेत् (mit dem Feinde *zusammenstossen, einen Angriff ma-
chen*) 10, 32 (Spr. 315). तस्मात्सिंह इवोदग्रमात्मानं वीह्य संपतेत् 9, 57.
अश्रयणाः संपतिता *zusammengeslossen, zusammengeronnen* AV. 5, 5,
9. — इमा लोकानपश्यतांसंपतिः समपतत् *hinfliegen zu* AIT. Br. 4, 30.
6, 18. ÇĀKH. Br. 22, 1. चकाराः u. s. w. संपतन्ति महाद्गुमान् HARIV. 12684.
माद्रीपुत्रो संपततो दिशश्च DRAUP. 5, 20. इमं लोकममुं चैव संपतेपुष्यामु-
खम् HARIV. 12036. संपतन्स (काकः) इमं लोकम् R. 5, 36, 43. सो ऽहं वि-
ञ्चुगतिं प्रेत्सुरिहं संपतितो भुवि *hierher gekommen* HARIV. 9673. संपत्य
तत्सनीडे BHĀṬ. 5, 31. संपतत्यासुरीं योनिम् *gelangen in* MBh. 12, 6736.
एषा मया संपतता वारुणी — दृष्टपूर्वा सभा *hinzukommen* 2, 382. संपत-
न्निव कामगः 3, 2766. बहुशः संपततो वो जनः शङ्केत दोषतः 2949. 8, 2044.
15, 546. HARIV. 3421. संपतद्भिः स्थितैश्चापि विमानैः *dahinfliegen* MBh. 4,
1776. R. 5, 7, 60. कर्णाचापव्युताश्चित्राः शराः संपतन्तस्ततस्ततः — व्यरा-
जन्त हेमाः श्रेणीकृता इव MBh. 7, 5621. 8, 934. 937. R. 6, 80, 8. HARIV.
11700. 12739. R. 1, 44, 22 (43, 15 GORR.). खे ग्रहः संपतन्निव 5, 32, 5. 7.
शरज्ञालैः समाकीर्णेषु मेघजालैरिवाम्बरे । न स्म संपतते काश्चिदत्तरीतचर-
स्तदा ॥ MBh. 7, 8627. स्यन्दनान्संपततः R. 2, 93, 15. नावः — संपेतुराशु-
गाः 89, 17. तरुणीशारुवैशेश्य नैरुन्नतगामिभिः । संपतद्भिरयोध्यायो न वि-
भासि महापथाः ॥ *lustwandeln* 114, 13 (123, 20 GORR.). इतो द्रव्यामि वै-
देहीम् — इतश्चेतश्च उःखितां संपततीं पदच्छया 5, 16, 50. Kām. NITIS. 7,
40. *hinabfliegen, herabfallen*: गृध्रः संपतते शीर्षे जनयन्मयमुत्तमम् MBh.

6, 98. जगाम भूमिं ज्वलिता महेत्का भ्रष्टाम्बरादिव संपतती 3789. चै-
त्यतैरा संपतिता — उत्का VARĀH. BRH. S. 32, 21. कृत्योदितान्संपतती
शाखा MBh. 1, 1387. *vor sich gehen, geschehen*: विकारिर्बहुभिः प्रातैः सं-
पतद्भिर्महाबलैः HARIV. 11739. — Vgl. संपात. — caus. *fliegen —, fallen*
machen, schleudern, hinabwerfen: शिलां संपातयामास तस्यारसि R. 6,
18, 50. स वै प्रेत्य नरके — गिरिमूर्ध्नः संपातयते Bhāg. P. 5, 26, 28.

— अभिसम् *hinfliegen, hineilen zu, stürzen auf*: महीतलात्केचिदु-
दीर्घविगाः (कपयः) पुनर्दुमायानभिसंपतन्ति R. 5, 60, 16. ते ऽन्योऽन्यमभिसं-
पेतुः पातयन्तः परस्परम् HARIV. 12545. *einherfliegen*: शस्त्रैश्च दिव्यैरभिसं-
पतद्भिः MBh. 7, 7295. — Vgl. अभिसंपात.

2. पत् (= 1. पत्) *fliegend, fallend; s. अत्ति०*.

3. पत्, पतयते NAIGH. 2, 21. DHĀTUP. 26, 50 (v. 1. für तप्). 1) *theilhaftig sein, mächtig sein, verfügen über; habhaft werden, innehaben, ha-
ben, potiri*; mit acc.: उग्रं तत्पतयते शर्वः RV. 1, 84, 9. 2, 1, 8. 3, 36, 4. 10,
23, 2. वसूनि 6, 45, 20. यशः 2, 1. स कृत्या मानुषाणामिच्छा कृतानि पतयते
1, 128, 7. 6, 25, 6. कृत्वो द्दियो नाम पतयते 2, 37, 2. 6, 66, 1. आदिन्द्रः सत्रा
तविषीरपतयत् 10, 113, 5. 6, 65, 3. नियुतः पत्यमानः 49, 4. मेजे पथो वर्तनिं
पत्यमानः 7, 18, 16. 8. mit instr.: इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमानः 3, 54, 15.
धते धान्यं पतयते वसव्यैः 6, 13, 4. या पतयति अग्रतोता सेहमिः VS. 8, 59.
27, 16. mit loc. *theilnehmen an*: त्रिरा दिवो विद्ये पत्यमानः RV. 3, 54,
11. इन्द्रोर्वेषु पतयते *ist ein Genosse der Götter* 9, 45, 4. इन्द्रो मङ्गा पूर्व-
हतावपतयत् 10, 113, 7. — 2) *taugen für, dienen zu* (dat.): इयमासुतिश्चा-
रुर्मदाय पतयते RV. 8, 1, 26. अयं हि त् अमर्त्य इन्द्ररत्यो न पतयते 10, 144,
1. वृचीवन्तः शर्वे पत्यमानाः 6, 27, 6. 10, 27, 6. — 3) *sein (taugen als Et-
was)*: अयनोकः पतयते माहेनावान् RV. 3, 56, 3. यः पतयति वृषभो वृष्यो-
वान् 6, 22, 1.

— अभि *innehaben*: अयं विश्वा अभि अियो ऽग्निर्वेषु पतयते RV. 8, 91,
9. अभि प्रियं रेकणाः पत्यमानः 10, 132, 3.

1. पतं (von 1. पत्) gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. gaṇa स्वलादि zu 140.
VOP. 26, 30. m. *Flug*; s. पतग, पतंग.

2. पत adj. = पुष्ट *wohlgenährt* ĠATĪDH. im ÇKDB.

पतक 1) adj. (von 1. पत्) *fallend u. s. w.* — 2) m. *eine astronomische*
Tafel WILS.

पतकुत्त s. u. पट 4.

पतग (1. पत + 1. ग) VOP. 26, 61. m. 1) *ein fliegendes Thier, Vogel* (AK.
2, 5, 33. H. 1316. HALĀJ. 2, 82): पतगोरगाः M. 7, 23. सर्पपतिपतगाः MBh.
7, 9442. पतगपन्नगाः R. 4, 22, 21. पिशाचपतगोरगैः 42, 7. ०वर Ḡaṭāju
R. 3, 56, 53. 54. पतगेश्वर desgl. 40. 42. 44. 45. 50. पतगराज Bein. Ga-
ruḍa's Bhāg. P. 2, 7, 16. पतंगी die Mutter der पतग 6, 6, 21. von der
Sonne: पतगो ऽसौ विभावसुः MBh. 6, 487. — 2) N. eines der fünf Feuer
beim Svadhākāra HARIV. 10467. — Vgl. पतंग, पतंगम.

पतंगं (पतम् adv. acc. von 1. पत, + 1. ग) UNĀDIS. 1, 118. 1) adj. *flie-
gend*: श्येन RV. 1, 118, 4. अश्र 4. NAIGH. 1, 14. — 2) m. a) *Vogel* UNĀDIS.
1, 118. AK. 3, 4, 3, 21. H. 1316. an. 3, 126. MED. g. 42. HALĀJ. 2, 82.
VIṢVA bei UGĒVAL. AV. 6, 50, 1. ०राज Bein. Garuḍa's PĀNKAT. ed. ORN.
57, 6. — b) *ein geflügeltes Insekt, Heuschrecke, Schmetterling, insbes.
ein Nachtschmetterling* (der in's Feuer liegt); = शलभ, शर्म AK. 2, 5,
28. TRIK. 3, 3, 62. H. 1213. H. an. MED. HALĀJ. 2, 102. VIṢVA a. a. O.